Total No. of Questions - 7] [Total Pages : 4

(2062)

9825

M.A. Examination

SANSKRIT

(निरुक्त तथा उपनिषद्)

Paper–VI

(Semester-II)

Time : Three Hours] [Max. Marks : Regular : 80 / Private : 100

परीक्षार्थी अपने उत्तरों को दी गयी उत्तर-पुस्तिका (40 पृष्ठ) तक ही सीमित रखें। कोई अतिरिक्त पृष्ठ जारी नहीं किया जाएगा।

नोट : नियमित छात्रों के लिए प्रश्न-पत्र 80 अंकों का तथा पत्राचार और प्राइवेट छात्रों के लिए प्रश्न-पत्र 100 अंकों का है।

1. **चतुर्णा**मिव व्याख्या कार्या–

(क) तमिमं समाम्नायं निघण्टव इत्याचक्षते। निघण्टवः कस्मात्। निगमा इमे भवन्ति। छन्दोभ्यः समाहृत्य समाम्नाताः।

(ख) एतावन्तः समानकर्माणो धातवः। धातुर्दधातेः। एतावन्त्यस्य सत्त्वस्य नामधेयानि। एतावतामर्थानामिदं तु अभिधानम्। नैघंटुकमिदं देवतानाम।

(ग) नैकपदानि निर्ब्रूयात्। नावैयाकरणाय। नानुपसन्नाय। अनिदंवदे वा। नित्यं ह्यविज्ञातुविज्ञानेऽसूया। उपसन्नाय तु निर्बूयात्।

(घ) विश्वामित्रः सर्वमित्रः। सर्वं संसूतम्। सुदाः कल्याणदानः। यैजवनः पिजवनस्य पुत्रः। पिजवनः पुनः स्पर्धनीयजवो वा। अमिश्रीभावगतिर्वा।

(ङ) कारुरहमस्मि। कर्ता स्तोमानाम्। ततो भिषका। ततइति सन्तान-नाम। पितुर्वा। पुत्रस्य वा। उपलप्रक्षिणी सक्तुकारिका। नना नमतेः।

(च) वृको लाङ्गलं भवति। विकर्तनात्। लाङ्गलं लगतेः। लाङ्गूलवद् वा। लाङ्गूलं लगतेः। लंगतेः लंबतेर्वा। 4×4=16

(5×4=20)

2. षण्णां पदानां निर्वचनानि कुरुत–

(क) आचार्यः।

(ख) सीमा।

(ग) नरकम्।

(घ) मृगः।

(ङ) कम्बोजः।

(च) राजा।

(छ) गौः।

(ज) वृक्षः।

(झ) शृङ्गम्।

(ञ) अन्तरिक्षम्। 12(15)

3. एक एव प्रश्नः समाधीयताम्–

(क) मन्त्राणामनर्थकत्वं सार्थकत्वं वेति साधयत।

(ख) प्रत्यक्षकृता मन्त्रा भवन्तीत विचार्यताम्। 12(15)

4. द्वयोरेव व्याख्याकार्या–

(क) असुयो नाम ते लोका अन्धेन तमसाऽऽवृत्ताः।
ताँस्ते प्रेत्याभिगच्छन्ति ये के चात्महनो जनाः।।

(ख) यस्मिन् सर्वाणि भूतानि आत्मैवाभूद्विजानतः।
तत्र को मोहः कः शोक एकत्वमनुपश्यतः।।

(ग) वापुर निलममृतमथेदं भस्मान्तं शरीरम्।
ओंक्रतो स्मर कृतं स्मर क्रतो स्मर क्रतं स्मर। 10(12½)

5. द्वयोरेकस्य विषस्य विवेचनं कुरुत–

(क) विद्या।

(ख) असम्भूतिः। 10(12½)

6. मन्त्रद्वयं विविच्यताम्–

(क) अहं वृक्षस्य रेरिवा। कीर्तिः पृष्ठं गिरेरिव।
ऊर्ध्वपवित्रो वाजिनीवि स्वमृतमस्मि द्रविणं सुवर्चसम्। सुमेधा अमृतोऽक्षितः।।

(ख) अन्नादः वै प्रजाः प्रजायन्ते याः काश्च पृथिवी श्रिताः।

अथोऽन्नेनैव जीवन्त्यन्नमेवयन्ति अन्ततः।

(ग) यतो वाचो निवर्तन्तेऽप्राप्य मनसा सह।

आनन्दं ब्रह्मणो विद्वान् न बिभेति कदाचनेति।।

10(12½)

7. एक एवं विषयो विविच्यताम्–

(क) आत्मनो शरीराद्निर्गमनमार्गाः।

(ख) पञ्चकोशाः। 10(12½)